वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

आधुनिक समाज मे धार्मिक शिक्षा की भूमिका
(हिन्दू धर्म के विशेष संदर्भ में)

डॉ. अर्चना दुबे
सहायक प्राध्यापक (समाज शास्त्र)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

शोध सारांश

धार्मिक शिक्षा बच्चों की दृष्टि को विकसित करने मे सहायक होती है। धर्म बच्चों को उदार और सहनशीलता प्रदान करके निःस्वार्थ भाव से काम करने के लिए एवं परोपकार करके मानवता की सेवा करने का भाव विकसित करता है। धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद व्यक्ति संकीर्ण दृष्टिकोण को त्याग कर मानवीय अनुभव की भावना विकसित करता है। हिन्दू धर्म का मूल है ईश्वर सर्वशक्तिमान है और वही सृष्टि का निर्माता है। अतः हमें कोई भी बुरा कार्य नहीं करना चाहिए। हम सभी एक ही परमपिता की संतान है और हम सब मनुष्यों को एक साथ रहना चाहिए। ईश्वर की भक्ति, धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, नागरिक व सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति एवं राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण ही वैदिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। वैदिक शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के संपूर्ण विकास पर केंद्रित होता है। इसके आत्म संयम, आत्मविश्वास, न्याय एवं आत्म सम्मान इत्यादि गुणों विकास करना है। हिंदू धर्म में, वेदों के अनुसार शिक्षा द्वारा मनुष्य की निसर्ग सिद्धि शक्तियों का सम्यक विकास करके उसे सच्चे अर्थ में मनुष्य बनाना है!

बीज शब्द

धार्मिक शिक्षा, हिन्दू धर्म, वैदिक शिक्षा प्राणली

प्रस्तावना

धर्म का संबंध मानव समाज के प्रत्येक व्यक्ति से है चाहे वह किसी भी क्षेत्र से हो। धर्म का मूल समाज मे सामंजस्य और प्रेम एकत्व का भाव जाग्रत करना, मानव को आत्मबल प्रदान

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

करना ताकि कोई भी अपने को अकेला न अनुभव करे, धर्म की राह पर चल कर समाज के हित में कार्य करे। आधुनिक समाज मे धार्मिक शिक्षा का अत्यधिक महत्व है, इसको इसप्रकार से समझा जा सकता है की जैसे आधुनिक युग मे बड़ी बड़ी कंपनियों में मानव संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार और उसी कार्य प्रणाली के आधार के रूप मे हमारे इस वृहत शशीसमाज में धर्म नामक प्रणाली की आवश्यकता होगी जो समाज मे लोगों को एकजुटता, सामंजस्य, प्रेम और जीवन को सही प्रकार से जीने की मार्गदर्शिका का कार्य करता है। धर्म दैनिक सामाजिक जीवन के ताने बाने से जुड़ा है। मानव सभ्यता में धर्म का अस्तित्व सबसे स्थायी सामाजिक घटनाओं में से एक है, जो समाजशास्त्रीय विश्लेषण को प्रेरित करता है। धर्म एक सामाजिक संस्था है जिसमे इसप्रकार की मान्यताएं एवं गतिविधियां शामिल हैं जिससे सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती हैं। धर्म एक सांस्कृतिक सर्वभौमिकता का उदाहरण है जो की किसी न किसी रूप में सभी समुदायों में पाया जाता है। इसीलिए धार्मिक शिक्षा व्यक्ति को विविधता का महत्व एवं बहु सांस्कृतिक समझ व सम्मान देने वाला व्यक्तित्व बनाता है। सच तो यह है की धर्म स्वयं ही एक शिक्षा है और शिक्षा एक से अधिक प्रकार से धर्म से प्रभावित होती है।

शोध के उद्देश्य

1 हिंदू धर्म की आधुनिक भारतीय संदर्भ में उपदेयता सिद्ध करना।

2 शिक्षा प्रणाली में वैदिक शिक्षण पद्धति की सार्थकता को प्रतिबिंबित करना।

परिकल्पना

1 वैदिक ज्ञान परंपराओं से मानवता प्रोत्साहित होगी।

2 वैदिक ज्ञान परंपराओं से समग्र सामाजिक विकास परिलीक्षित होगा।

धर्म

भारतीय संस्कृति मे धर्म का अर्थ शाब्दिक द्रष्टीकोण से धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है जो धारण करे या अस्तित्व को बनाए रखे। 'धारयतीति धर्मः।' जो समाज का व्यक्ति का धारण करे वह धर्म है। यह धर्म की पहली परिभाषा कही जा सकती है। समाजशास्त्री गिलिन एवं

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

गिलिन ने धर्म को परिभाषित करते हुए लिखा है - एक सामाजिक समूह में फैले हुए उन भावनात्मक विश्वासों को जो कि किसी अलौकिक शक्ति से संबंधित हैं एवं उन बाहरी व्यवहारों , भौतिक वस्तुओं और प्रतीकों को, जो इन विश्वासों से संबंध रखते हैं, को धर्म के समाजशास्त्रीय क्षेत्र में सम्मिलित किया जा सकता है। प्रत्येक धर्म का आधार किसी शक्ति पर विश्वास जो की अलौकिक है यह मानवीय शक्ति से अवश्य ही श्रेष्ठ है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार सम्पूर्ण धर्म वेदान्त मे समाहित है वेदान्त दर्शन के तीन चरणों में द्वैत, विशिष्ट अद्वैत एवं अद्वैत जो कि एक बाद दूसरा आता है। मनुष्य मे आध्यात्मिक विकास के ये तीन चरण हैं इनमें से तीनों आवश्यक हैं। डॉ. राधाकृष्णन ने धर्म की व्याख्या करते हुए लिखा है की यह 'ध' धातु से बना हुआ है जिसका अर्थ बनाए रखना, धारण करना, पुष्ट है। यही वह मानदंड है जो की विश्व को धारण करता है, ये किसी भी व्यक्ति का मूल तत्व है जिसके कारण वह है।

धार्मिक शिक्षा

धर्म का अध्ययन करने से बच्चों को स्वयं को और अपने आस पास की दुनिया को समझने में मदद मिलती है। धार्मिक शिक्षा के माध्यम से नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्यों को आचरण मे लाया जा सकता है। धार्मिक शिक्षा मे धार्मिक परंपराओं की कहानियां सुनाकर ,विभिन्न महापुरुषों के चरित्रों के उदाहरण दे कर बच्चों का चारित्रिक एवं नैतिक विकास किया जाना शामिल है। धार्मिक शिक्षा से तात्पर्य धर्म के विषय मे सीखने की प्रक्रिया से है जिसमें उनकी मान्यताएं, मूल्य और प्रथाएं इत्यादि सीखना व आचरण मे लाना। हिन्दू धर्म ने शैक्षिक आदर्शों को संत्रप्त किया साथ ही धर्म के अध्ययन को भी। प्राचीन भारत मे वैदिक साहित्य उच्चतर शिक्षा के लिए अपरिहार्य होता था। बच्चे आश्रम मे गुरु के सानिध्य में शिक्षा ग्रहण करते थे जो की प्रायः वनों मे हुआ करता था। आचार्य बच्चों को अपने बच्चे की तरह रखते थे उन्हे शिक्षा का एवं रहने खाने का कोई शुल्क नहीं देना होता था। पूरे पाठ्यक्रम के दौरान सादा वस्त्र पहनना, सादा भोजन एवं कठोर बिस्तर का प्रयोग करना तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना आदि नियम छात्रों में अनुशासन एवं चरित्र निर्माण में सहायक होते थे। इस स्तर पर अध्ययन में वैदिक मंत्रों का पाठ एवं ध्वनिविज्ञान, बलिदान प्रदर्शन के नियम, व्याकरण, खगोल विज्ञान , छंदशस्त्र और व्युत्पति का अध्ययन वेद शस्त्रों के माध्यम से कराया जाता था। हिन्दू धर्म मे

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

शिक्षा की विधि विषय की प्रकृति के अनुसार भिन्न होती थी। विधार्थी सर्वप्रथम अपने विधालय के विशेष वेद को याद करते थे, जिसमें उच्चारण पर विशेष जोर दिया जाता था। कानून, अनुष्ठान, तर्कशास्त्र और छंदशस्त्र जैसे साहित्यिक विषयों के अध्ययन से विधायार्थियों की समझ मे महत्वपूर्ण विकास होता है। एक अन्य विधि द्रष्टनतों का प्रयोग, जिसका उपयोग व्यक्तिगत आध्यात्मिक शिक्षण मे किया जाता था। उपनिषद का प्रयोग उच्च शिक्षा मे किया जाता था। इसी प्रकार धर्मशास्त्र शिक्षा की सबसे लोकप्रिय बिधि होती थी शास्त्रार्थ, जिसमें छात्र प्रश्न पूछता था और शिक्षक उसे संदर्भित विषय पर विस्तार से प्रवचन देता था जो की याद रखने मे बड़ी भूमिका निभाता था।

धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता

वैश्विक स्तर पर तीव्र परिवर्तन एवं विज्ञान और प्रौधोयोगिकी में प्रगति से हमारे समाज मे नाटकीय परिवर्तन हो रहे हैं। निःसंदेह विज्ञान, वाणिज्य और प्रौधोयोगिकी मे प्रगति से देश का आर्थिक विकास हो रहा है, परन्तु भारतीय संस्कृति व परंपरा से अलगाव एवं मूल्यों मे गिरावट भी देखी जा रही है। वहीं ब्रिटिश की मैकाल शिक्षा प्रणाली बाबू बनने तक ही सीमित है, यह एक आत्मकेंद्रित यानि जीवकोपार्जन केंद्रित व्यक्ति का निर्माण करता है। इसप्रकार की पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली ने भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं को नष्ट कर आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच, रचनात्मकता व उद्यमशीलता को समाप्त कर दिया है। हिन्दू धर्म के प्रमुख स्तंभों मे वैदिक साहित्य हैं, जो भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का आधार हैं। वर्तमान समय मे आवश्यकता है वैदिक साहित्य की दार्शनिक शिक्षा, नैतिक सिद्धांत और व्यावहारिक ज्ञान के साथ ही प्राचीन भारत की गहन समझ और ज्ञान में अंतरदृष्टि प्रदान कर सहस्त्रशताब्दियों से भारतीय जीवन शैली को आकार देकर साहित्य, कला, संगीत, वास्तुकला एवं शासन सहित विभिन्न क्षत्रों को प्रभावित करते धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा की।

धार्मिक शिक्षा का महत्व

हिन्दू धर्म की ऋग्वेद की ऋचाओं मे कहा गया है कि "आ नो भद्रा: क्रतवो यंतु विश्वतः" यानि सात्विक विचार हर दिशा से आने दो। स्वयं को किसी भी चीज से वंचित मत करो, अच्छी बात

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

को ग्रहण करो, तभी कल्याण होगा। हिन्दू धर्म के प्राचीन वेदों और अन्य शस्त्रों मे चिकित्सा प्रणालियों का उल्लेख मिलता है, जो की इसकी संपन्नता को दर्शता है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता (1000-500 ईसा पूर्व) में 700 औषधीय जड़ी बूटियों के साहित्य प्रमुख पारंपरिक संग्रह हैं। हिन्दू उपनिषद जो की ज्ञानकाण्ड है, जिसमें आध्यात्मिक जीवन का प्रतिपादन किस प्रकार किया जाए का वर्णन किया गया है। साथ ही साधारण मनुष्य को कैसे कर्म करना चाहिए इसका उल्लेख भी हमारे उपनिषदों से प्राप्त होता है। तैतिरियोपनिषद मे नीति बोध का रूप आधिक स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। हिन्दू धार्मिक मूल्यों को यथोचित महत्व को देने की आवश्यकता है ताकि शिक्षा के माध्यम से भावी पीढ़ी को सही दिशा प्रदान की जा सके। "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवभागं यथा सजननां उपसते "ऋग्वेद 10.19.12 "साथ चलने वाले, एक स्वर मे बोलने वाले और एक दूसरे के मन को जानने वाला समाज ही अपने युग को बेहतर बनाने की सामर्थ्य से युक्त हो सकता है और इस प्रकार के युग में जीने वाले स्वयं के लिए अच्छे वर्तमान और आने वाली पीढ़ी के लिए एक अच्छे भविष्य की संकल्पना करते हैं।"

आध्यात्मिक विकास

धार्मिक शिक्षा बच्चों के नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का पोषण करती है। इस प्रकार के मूल्यों से मनुष्य को लघुता से महानता की ओर अग्रसर करती है। ये मनुष्य की इच्छाशक्ति के साथ ही मन की एकाग्रता को भी विकसित करता है। आध्यात्मिक शिक्षा मनुष्य को गलत रास्ते पर जाने से रोकता और सही एवं अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी देता है। भारतीय हिन्दू संस्कृति को यदि एक शब्द मे दर्शाना है तो वो है "आध्यात्मिकता "। उपनिषद मे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की अवधारणा है जिसमें अर्थ को नकारा नहीं है वरन् अर्थ एवं काम का उपयोग धर्म पर आधारित हो। हम जितना भी धनार्जन करें जो परिवार के लिए जितना भी आवश्यक है उसके अतिरिक्त होने पर वह समाज का है। इसी प्रकार तृतीय उपनिषद में पंचकोश की संकल्पना दी गई जिसके अंतिम कोश का नाम आनंदमय कोश। आनंदमय का तात्पर्य आध्यात्मिक विकास, ये आध्यात्मिकता ही सच्चे आनंद की अनुभूति करा सकता है।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

नैतिक विकास

धार्मिक शिक्षा के द्वारा बच्चों मे सद्गुणों का विकास किया जा सकता है। बच्चे शिक्षा ग्रहण करके सद्गुणी, विनम्र, ईमानदारी, परोपकारी इत्यादि गुणों का विकास करते हैं। धर्म की शिक्षा के माध्यम से नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि बच्चे अनेक अच्छे गुणों और आदतों का निर्माण हो सके, उत्तरदायित्व की भावना का विकास सत्य की खोज, उत्तम आदर्शों की प्राप्ति एवं जीवन दर्शन का निर्माण व आध्यात्मिक मूल्यों की अभिव्यक्ति इत्यादि। उपनिषद के श्लोक "विधा ददाति विनयं" एक अच्छे मानव का विकास करने में सक्षम है। हिन्दू दर्शन के द्वारा मूल्यपरक शिक्षा जिसमे करूणा, सहानुभूति, रचनात्मक कल्पनाशक्ति, धैर्य, शिष्टाचार, समर्पण जैसे शाश्वत् जीवन मूल्य शिक्षा के आधार हैं।

सामुदायिक विकास

आधुनिक समाज मे पश्चिमी प्रभाव के परिणामस्वरूप वर्तमान पीढ़ी वैयक्तिक होती जा रही है, भारतीय संस्कृति एवं दर्शन उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं। जबकि वेद, उपनिषद, पुराण, एवं महाकाव्य जैसे की रामायण महाभारत में सर्वे भवन्तु सुखिन:, परहित सरस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधिमाई, वसुधैव कुटुंबकम की विचारधारा पर आधारित है। शैक्षणिक प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है जो समाज मे आपसी प्रेम एवं सद्भाव व सामुदायिक हित के लिय अग्रसर हो। संबंधों मे सकारात्मक सामंजस्य रखते हुए सतत् विकास करना यही भारतीय दर्शन की मूल विशेषता है और आधुनिक समाज की आवश्यकता है। "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवभागं यथा सजननां उपसते "ऋग्वेद 10.19.12 "साथ चलने वाले, एक स्वर मे बोलने वाले और एक दूसरे के मन को जानने वाला समाज ही अपने युग को बेहतर बनाने की सामर्थ्य से युक्त हो सकता है और इस प्रकार के युग में जीने वाले स्वयं के लिए अच्छे वर्तमान और आने वाली पीढ़ी के लिए एक अच्छे भविष्य की संकल्पना करते हैं।"

सांस्कृतिक विकास

धार्मिक शिक्षा बच्चों के सांस्कृतिक विकास एवं सांस्कृतिक जागरूकता के द्वारा सहिष्णु बनाने मे सहायक होता है। सम्पूर्ण वैदिक ग्रंथ पुराण स्मृतिग्रंथ दर्शन व्याकरण जो की भारत की

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

सभ्यता संस्कृति की रक्षा करने मे सहायक हैं। संस्कारों से कायिक वाचिक एवं मानसिक पवित्रता के साथ ही सामाजिक मूल्यों व सांस्कृतिक विकास को बल मिलता है। संस्कारों का वैज्ञानिक महत्व भी होता है। बदलते सामाजिक परिवेश मे भारतीय मूल्यों के साथ हमारी शिक्षा व्यवस्था को को समावेशी बनाना अतिआवश्यक है जो कि प्राचीन ज्ञान संस्कृति के बिना नहीं हो सकती, आधुनिकता की दौड़ मे सरपट भाग रहें हैं अपनी वैदिक संस्कृति में निहित ज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे हैं, जैसा कि उपनिषद मे कहा गया है कि दृष्टिहीन को रास्ता दिखने वाला भी दृष्टिहीन तो लक्ष्य कैसे प्राप्त हो पायेगा। अंधी दौड़ का हिस्सा बनने से अच्छा है, वैदिक शिक्षा प्राप्त करके जीवन की किसी भी अज्ञानता के डर को मिटा दिया जाए। इसप्रकार धार्मिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी उन तारीकों का पता लगा सकेंगे जिससे वे समझ पाएंगे कि धर्म और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक युग में भौतिकता में विलुप्त होती पीढ़ी के मस्तिष्क में पवित्रता एवं धार्मिक जीवन की भावनाओं को विकसित करना शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा आरंभ से पूर्व बालक का उपनयन संस्कार होना साथ ही शिक्षा प्राप्त करते समय वैदिक नियम अनुसार व्रत धारण करना। ईश्वर की आराधना एवं ब्रह्चर्य का पालन करने से बालक के मस्तिष्क में पवित्र एवं धार्मिक भावनाओं का विकसित होने से उसकी आध्यात्मिक दृष्टि बलवान होती है। हिंदू धर्म में ज्ञान परंपराएं एवं प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती हैं। पुराणों में ज्ञान व मानवता को अप्रतिम माना गया है। आचार्य यास्क निरुक्त ने लिखा है -"नह्मेषु प्रत्यक्षमास्ति अनुषेरतपससो वा (निरक्त 12:13)" अर्थात जो ऋषि या तपस्वी नहीं वह धर्म का यथा सार्थ ज्ञान को नहीं जान सकता। अतः आर्ष प्रणीत सिद्धांतों व सूत्रों यानी हिंदू धर्म वैदिक धर्म सूत्रों के समझाने के लिए उन्हीं के अनुरूप चिंतन मनन करने हेतु अग्रसर होना होगा। हिंदू वैदिक संस्कृति के अविष्कृत विचारों ने तकनीकी और आधुनिक विज्ञान प्रौद्योगिकी के मूलाधार को दृढ़ करने में अद्भुत योगदान दिया है। हिंदू धर्म के वेद, पुराण, स्मृति ग्रंथ, दर्शन व अन्य वैदिक ग्रंथ के परिदृश्य में लागू होने पर स्थिरता, तनाव प्रबंधन एवं जीवन दर्शन के लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान के विशाल भंडार हैं जिसका उपयोग व्यक्ति समुदायों और मानवता को अग्रसर

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

करने के लिए किया जा सकता है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि आधुनिक समय में न केवल भारत बल्कि विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासतों को भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए। साथ ही शिक्षा प्रणाली के माध्यम से आगे भी बढ़ना चाहिए। उत्तम ज्ञान एक स्वस्थ समाज को आगे बढ़ाने में उसको शीर्ष पर पहुंचने में योगदान देता है।

संदर्भ सूची

1. complete-Works/Volume 5/Epistles First Series" amkrishnavivekananda.info
2. https://www.britannica.com/topic/education/Education-in-classical-cultures#ref47450
3. https://rajbhawan.rajasthan.gov.in/content/dam/rajbhawan/pdf/speech/2020/September/speech%2022.%209%20.%202020%20(2).pdf
4. मुखर्जी आर. के. एजुकेशन इन एन्शिन्ट इंडिया प्र. 55-56
5. इशोपनिषद
6. ऋग्वेद 10.19.127. बाशम ए. एल. अद्भूत भारत प्र. 193

SHODH SANCHAR